करुणा-मित्र
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

संपादकीय

भारतवर्ष की परंपरा रही है कि छोटे से छोटे पशु-पक्षी-कीटाणु को भी हम अपनी करुणा का भाजन बनाते हैं। हमारे पौराणिक ग्रंथ भी इस बात की गवाही देते हैं। चंद्रवंश के राजा शिवि ने अपनी शरण में आये कपोत की जान बचाने के लिये कपोत के वजन के बराबर का मांस शिकारी बाज को देने की पेशकश की, और अपना अंग काटकर खुद का मांस देने लगा, तब रहस्योद्घाटन हुआ कि देवता पशु-पक्षी के प्रति राजा की अनुकंपा व राजसी गुणों की परीक्षा लेने आये थे।

उसी उदात्त परंपरा का वहन करते हुए समय समय पर विभिन्न मनुष्यों के द्वारा प्राणीजगत के अधिकारों के लिये पहल की गयी। इसी विचार को मद्दे नजर रखते हुए 1959 में लेडी डाऊडींग के द्वारा यू. के. में ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी की पशु अधिकारों की संरक्षक चेरिटि के रूप में स्थापना हुई। 12 सितम्बर 1974 को पुणे में उसकी भारतीय शाखा की स्थापना करते हुए डायना रत्नागर ने उक्त मुहिम को आगे बढाया। परंतु, यू.के. स्थित बी.डबल्यु.सी. इसके पश्चात् डेढ दशक में ही आर्थिक कारणों से बंद हो गई। हालांकि, भारत स्थित बी.डबल्यु.सी. ने प्राणी कल्याण की अपनी मशाल को प्रज्ज्वलित रखना पसंद किया।

मैं अकेला ही चला था जानिबे- मंजिल,
लोग आते गये, कारवां बनता गया....

की तर्ज पर गिनती के सदस्यों के दम पर प्रारंभ हुई यह संस्था आज ढेर सारे सदस्यों का विशाल वटवृक्ष बन चुकी है।

37 वर्ष पूर्व इस संस्थाने सदस्यों के लिये इंग्लिश पत्रिका Compassionate Friend का प्रकाशन प्रारंभ किया, जो आज भी निरंतर प्रकाशित हो रही है। हिंदी और गुजराती पत्रिका प्रकाशन का प्रयोग भी शुरु के वर्षों में किया गया। जोकि, अधिक न चल पाया। परंतु, आज बहुत सारे सदस्य हिंदीभाषी प्रदेश से होने के कारण हिंदी पत्रिका का पुनः प्रकाशन प्रासंगिक एवं आवश्यक पाये जाने पर हम आपके सामने इस अंक के साथ प्रस्तुत है।

बी.डबल्यु.सी. (ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी) नाम इस बात का द्योतक है कि हर किसीको सुंदर दिखने का अधिकार है, अच्छा मनोरंजन पाने का भी, अच्छी चीजें खाने-पीने, ओढने-पहनने का भी। परंतु, इसके लिये किसी भी पशु-पक्षी-कीटाणु, आदि को पीडा पहुंचाने का उसे अधिकार नहीं है... चाहे वह जीव जल, स्थल, अथवा वायु कहीं का भी क्यों न हो। चाहे वह पशु-पक्षी आकर्षक हो या अनाकर्षक, खूबसूरत हो या बदसूरत, जंगली हो या पालतू। यह दुनिया जितनी मेरी या आपकी है, इतनी ही, बल्कि, अधिक इन मूक, अबोध पशु, पक्षी, कीटाणुओं की भी है। क्योंकि, क्रमिक विकासवाद-इवोल्युशन- के नियमानुसार मनुष्य की प्रजाति अन्य प्रजातियों की अपेक्षा काफी बाद में पृथ्वी पर आई।

हम मनुष्य अधिक बुद्धिमान हैं, अधिक बलशाली हैं, अधिक स्वार्थी भी हैं, परंतु, केवल इसी कारण से अन्यों कों पीडा पहुंचाने का, उनका शोषण करने का, निरीह प्राणीजगत की कत्ल करने का हमें अधिकार नहीं मिल जाता है। कुदरत ने हमें संवेदनशीलता की इतनी बडी विरासत दी है, तो हम अपनी मैत्री, करुणा, संवेदना इस मूक प्राणी-विश्व पर क्यों न बरसायें? क्यों न हम उनकी रक्षा का, संवर्धन का बीड़ा उठाएं? हमारा कर्तव्य बनता है कि अन्य कमज़ोर जीवसृष्टि को हम अभय व संरक्षण प्रदान करें। जब भी राह चलते हुए हमारा सामना किसी पशु-पक्षी से होता है, तब हम यह अवश्य सोचें कि हमने, मनुष्य जाति ने उनके रहने की जगह छीन ली है, इसी लिये वे हमें हमारे रास्ते में आते दिखते हैं। हम उन्हें अपने क्रोध का नहीं, करुणा का भाजन बनायें। सिर्फ यही नहीं, हम अपने दैनंदिन और अन्य उपयोग की सामग्री में ऐसी कोई बात पाते हैं, जिसकी निर्माण प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर पशु-पक्षी-किटाणुओं के साथ हिंसा या अत्याचार हुआ हो तो ऐसी सामग्री के उपयोग से हम बचें।

अपने रोज़मर्रा के जीवन में खानेपीने की चीजों से लेकर मनोरंजन के तमाशों तक, वैभव प्रदर्शन के सामान से लेकर फैशन और सौंदर्यवर्धक सामग्री तक, दवाई उत्पादन से लेकर विज्ञान की खोजों तक, कदम कदम पर हम इन अवाक् जीवों को त्रासदी का शिकार बनाते रहते हैं। उनका कत्ल तक करने से हम कतराते नहीं। ऐसा करते समय हम आसानी से इस तथ्य को अनदेखा कर देते हैं कि हमारे ऐसा करने पर समूचे पर्यावरण का संतुलन बिगड जाता है। सृष्टि की रचना करते वक्त कुदरत के द्वारा इस जीव-संतुलन का ध्यान रखा गया था। पर हम अपने लोभ, लालसा, आडंबर, स्टेटस के मोह के कारण कितने पशु-पक्षी-कीटाणुओं की अनवरत निर्मम हत्या करते रहते हैं। बी.डबल्यु.सी. का साहित्य पढते रहेंगे, तो आप जान पायेंगे कि, मांसाहारी रहने के लिये हमें कितनी वनस्पति-सृष्टि का विनाश करना पडता है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि मांसाहार के लिये पाले जाने वाले पशुओं को तगडा करने के लिये यदि खेत उत्पाद नहीं खिलाये जाते तो विश्व के भूख्र-पीडितों को खिलाने के लिये पर्याप्त अन्न होता। "जीयो और जीने दो" के सिद्धांत पर हम अन्य जीवों का भी आदर करते हुए उनके प्रति मैत्री व करुणा का भाव रख पाते हैं तो उनका कल्याण तो होगा ही होगा, हमारे लिये भी यह शुभ भाव निश्चित् ही कल्याणकारी होगा।

आओ हम सब मिलकर प्राणी-विश्व के लिये
एक मैत्रीपूर्ण वातावरण का निर्माण करें।

- भरत कापडीआ

अपनी राय, सुझाव, प्रतिक्रिया, पत्रिका में प्रकाशनार्थ सामग्री, आदि के लिये editorkm@bwcindia.org पर ई-मेल के द्वारा अथवा बी.डबल्यु.सी. के पते पर आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

"अहिंसा सिल्क" अहिंसक नहीं है

-खुर्शीद भाथेना

आजकल ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी को कोई न कोई **"अहिंसा रेशम"** के बारे में बताता रहता है। यह **"अहिंसक रेशम"** आंध्र प्रदेश स्टेट हेन्डलूम को-ऑप. सोसायटी के तकनीकी अधिकारी श्री कुसुमा राजैया के द्वारा बनाया गया है। इस लेखिका ने स्वयं धर्मवरम स्थित रेशम पालन फेडरेशन में जाकर श्री राजैया को साथ रखते हुए रेशम के कीटकोश और उसकी उत्पादन प्रक्रिया को देखने के उद्देश्य से छानबीन की।

राज्य शासन द्वारा संचालित रेशम पालन फेडरेशन में दो प्रकार के रेशम-कीट हैं। फोरेन रेस (विदेशी प्रजाति) और लोकल रेस (स्थानीय प्रजाति)। पतंगों को कोश तोड़कर साथी ढुंढने की आज़ादी दी जाती है। इसके परिणाम स्वरुप संकर कोश से बाहर आये नर व मादा पतंगों को तीन घंटों तक मेटींग के लिये साथ रखा जाता है। तत्पश्चात् मादा पतंगों को अलग करके अंडे देने के लिये ट्रे में रखा जाता है। नर को फ्रीज़ में सेमीफ्रोज़न अवस्था में रखे जाते हैं। वहां से जल्द जल्द बाहर निकाला जाता है, ताकि यह प्रजनन प्रक्रिया जारी रहे और अंततः उनकी प्रजनन क्षमता खत्म होने पर नर पतंगों को मरने के लिये कूड़े-दान के हवाले किया जाता है।

रेशम का स्रोत-पतंगाः मानवों की रेशम पाने की लालसा का शिकार तसवीरः रोहन (भाटे) शाह

मादा पतंगों के द्वारा अंडे दिये जाने के बाद उन्हें मिक्सर में पिसा जाता है और उनके पिसे शरीर को माइक्रोस्कोप के ज़रिये जांचा जाता है। यदि, उसमें किसी रोग का पता चलता है तो उन मादाओं के द्वारा दिये गये तमाम अंडों को तुरंत ही नष्ट कर दिया जाता है। जो अंडे रोगविहीन पाये जाते हैं उन्हें किसानों को बेच दिया जाता हैं, जोकि उनको रेशम-कीडों में विकसित करने हेतु पालते हैं। किसान इन अंडों को बांस की टोकरी में रखकर पालते हैं, जहां वे इल्ली के रूप में विकसित होते हैं। उन्हें चार सप्ताह तक शहतुत के पत्ते खिलाये जाते हैं। जैसे जैसे वे बडे होते हैं, इल्ली का रंग सफेद में से सुनहरा-भूरा हो जाता है और उनके दोनों ओर के मुंह पर छिद्र दिखाई देते हैं। एक छेद में से वे फाइब्रोइन (कच्चा रेशम) उगलती हैं, तो दूसरे से सेरिसिन (बोन्डींग गम)। ये दोनों घटक मिलकर हवा के संपर्क में आने पर सख्त हो जाते हैं, जिससे कि बुनियादी रेशम तन्तु बनता है। यह तन्तु दो रेशों का संयोजन होता है, जो गोंद (बोंडींग गम) के ज़रिये जुडा रहता है। एक इल्ली दो से चार दिनों में करीबन १००० गज़ फाइब्रोइन उगलती है। यह फाइब्रोइन उसके शरीर के इर्दगिर्द कीट-कोश के रूप में उसकी रक्षा करता है। उसका रूपांतरण इल्ली से कोश (क्राइसेलिस) में और कोश से पतंगे में होता है। कीट-कोश से बाहर निकलने के लिये क्राइसेलिस को अपना आवरण खोलकर १५ दिन में बाहर आना होता है।

पारंपरिक रेशम उत्पादन के लिये कोश को जीवित अवस्था में ही कोशावस्था के सातवें या नौवें दिन कीट-कोश के समेत ही गर्म पानी में उबाला जाता है, जिससे कि उसका रेशम तंतु अटूट रहे और निरंतर लपेटा जा सके। हमने एक जगह की मुलाकात की, जहां पर पारिवारिक सदस्य मिलकर मिट्टी के विशाल पात्र में कीट-कोश को उबाल रहे थे। जैसे ही कीट-कोशों को उबालना शुरु हुआ, सेरेसिन फाइब्रोइन से विभक्त हुआ और रेशम तंतु को हस्त-निर्मित लकडी के चरखे में लपेटा गया। इसे फिलामेंट रेशम कहते हैं, जिसे पाने के लिये जीवित कोशों को गर्म पानी में उबालकर उनके जीवन का अंत कर दिया जाता है। रेशम की एक साडी बनाने के लिये लगभग ५०००० (पचास हज़ार) ऐसे कीट-कोशों को उबालकर मारा जाता है।

यदि, फिर भी, ऐसे कोशों को मारा नहीं जाता, और, कोश को पतंगे के रूप में विकसित होने दिया जाता है, और छेद किये हुए कोश के ज़रिये जो रेशम बनता है, उसे **"स्पन सिल्क"** कहते हैं। इसीको राजैया अहिंसक कहते है। तथापि, यह रेशम अहिंसक नहीं है, क्योंकि, उस कीट-कोश से बाहर आये पतंगे विक्षिप्त और उडने में असमर्थ होते हैं। अंततः वे कुम्हलाकर मर जाते हैं। यह तथाकथित **"अहिंसा सिल्क"** या **"अहिंसा शान्ति सिल्क"** उत्पीडित मौत के शिकार पतंगे की ओर अंगुलि निर्देश करता है। यह पारंपरिक रेशम से कतई अलग नहीं है, जहां, प्रत्येक उबाला हुआ कीट-कोश एक जीव की हानि को दर्शाता है।

केवल १०० ग्राम रेशम पाने के लिये लगभग १,५०० कोशों को उबाला जाता है। और विच्छेदित कीट-कोश की स्थिति में लगभग दुगने पतंगे मर जाते हैं। पारंपरिक रेशम में कीट-कोश के भीतर के पतंगे मर जाते हैं, और रेशम पैदा किया जाता है। जबकि, तथाकथित अहिंसा सिल्क में प्रयुक्त कीट-कोश में पतंगे नहीं होते हैं। तथापि, बाद में बाहर आनेवाले पतंगे विनष्ट हो जाते हैं।

कीट-कोश में पनप रहे जीवन को उबालकर नष्ट करना और पूर्णतया विकसित पतंगों को कुचल देने में या फ्रीज़ में रखकर कूडेदान में मरने के लिये छोड देने में कोई खास फर्क नहीं है।

बी. डबल्यु. सी. इस निष्कर्ष पर आने को विवश है कि, किसी भी प्रकार का रेशम सही मायने में **"अहिंसक"** नहीं हो सकता, सिवाय कि वह कृत्रिम तरीके से पोलिस्टर प्रकार के धागों से निर्मित किया गया हो।

खुर्शीद भाथेना बी. डबल्यु. सी. की ट्रस्टी और अवैतनिक सचिव हैं।

तरंग नहीं, तथ्य

चूना

-निर्मल निश्चित

चूना अर्थात् Lime शब्द के तीन अर्थ हैं। १. खट्टे स्वाद वाला फल, २. चिपकने वाला गोंद, जो पक्षियों को फांसने के काम आता है, और ३. केल्शियम कार्बोनेट अथवा CaCo3।

केल्शियम कार्बोनेट खनिज भी है, और प्राणिज भी। चूना पथ्थर और केल्साईट के प्राप्ति स्रोत चट्टान, ताज़ा जल और कमज़ोर समुद्री जीव के कवच (उदा. मोलस्क, सीपी शंख, घोंघा, समुद्रफेनी, स्पंज, मूंगा, मोती, अण्डकवच, आदि) हैं।

केल्साईट एवं आरागोनाईट में से प्राप्त केल्शियम कार्बोनेट समुद्री एवं गैर-समुद्री मूल का हो सकता है। जबकि, समुद्री मूल का केल्शियम कार्बोनेट चाक, संगमरमर, वेटराईट और ट्रेवर्टाईन से मिलता है। भारी पानी केल्शियम कार्बोनेट का परिणमन है, जैसे कि, चूना पथ्थर और चाक। कृषीय चूना अथवा बागबानी चूना पीसकर चूना पथ्थर से अथवा चाक और अन्य खनिज से बनाया जाता है। इसका प्रयोग भूमि अम्लता को कम करने वाले संयोजी के रुप में किया जाता है, और चिरोडी (जिप्सम) का प्रयोग पौधों में केल्शियम के स्रोत के रूप में किया जाता है।

केल्शियम कार्बोनेट को गर्म करने पर उसमें से कार्बन डाइऑक्साइड दूर होता है और उसका रुपांतरण केल्शियम ऑक्साइड में होता है, जिसे क्विकलाईम, जला चूना और शुद्ध चूने के नाम से भी जाना जाता है। केल्शियम ऑक्साइड अखाद्य है।

केल्शियम ऑक्साइड को अत्यधिक मात्रा में नियंत्रित वातावरण में शुद्ध जल से ट्रीट करन की प्रक्रिया को चूने का शमन (स्लेकिंग) कहते हैं। फलतः केल्शियम हाइड्रोक्साइड पैदा होता है, जिसे खाद्य चूना कहते हैं, जिसका प्रयोग पान में होता है। इसका प्रयोग पेठे नामक मिठाई बनाने में भी होता है।

पानः मनुष्यों की आदिम चाह
तसवीर सौजन्यः योगेश खणगे

केल्शियम हाइड्रोक्साइड

केल्शियम हाइड्रोक्साइड के साथ चाक मिलाने पर दीवारों की पुताई करने व नाली की सफाई में काम आने वाला सस्ता किटाणुनाशक पदार्थ प्राप्त होता है। वास्तव में केल्शियम हाइड्रोक्साइड के ढेर सारे उपयोग हैं। तथापि, यह संभव है कि उसका स्रोत चूना पथ्थर हो, और फलतः वह खनिज मूल का हो।

चर्म शोधन उद्योग में खाल कमाने की प्रक्रिया में केल्शियम हाइड्रोक्साइड का प्रयोग होता है। खाद्यान्न उद्योग में इसका प्रयोग जल प्रक्रिया में, उदा. सौम्य पेय (सोफ्ट ड्रींक) बनाने में होता है। पेट्रोलियम रिफाईनिंग उद्योग इसका उपयोग ओइल एडेटीव के रूप में करता है।

सडक निर्माण उद्योग मिट्टी को स्थैर्य प्रदान करने में प्रयोग करता है। रंगाई उद्योग सूखे रंग की मिलावट की पूर्ति के रूप में करता है, और कागज़ उद्योग इसका प्रयोग परत चढाने वाले रंग द्रव्य के रूप में करता है।

औषधि निर्माण में केल्शियम कार्बोनेट का प्रयोग एन्टेसिड (एसिडिटि शामक) दवाई एवं टुथ-पेस्ट के घटक के रूप में तथा केल्शियम के पूरक के रूप में होता है। कवच के मूल का केल्शियम, जिसे सेन्द्रिय की संज्ञा दी गई है, एलोपथी, आयुर्वेद, सिद्ध, युनानी और होमियोपथी दवाईयों के बनाने में होता है (केल्शियम पूरक जोकि शैवाल से प्राप्त किये गये हैं, वोही विगन हो सकते हैं)।

कांच उद्योग केल्शियम ऑक्साइड और केल्शियम कार्बोनेट दोनों का प्रयोग करता है।

रसायण संयोजक केल्शियम कार्बाइड चूना, कोयला, कोक, कार्बन मिश्रण से पैदा होता है। केल्शियम कार्बाइड (मसाला के नाम से प्रचलित) कार्बाइड गेस, एसिटिलिन, ईथेफोन एवं ईथेलिन गेस द्वारा कृत्रिम तरीके से फल पकाने के काम में लाना भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित है।

उपर्युक्त एसिटिलिन, अधिकांश गेस वेल्डींग के काम में प्रयुक्त, केल्शियम कार्बाइड से बनता है। केल्शियम साइनाइड भी केल्शियम कार्बाइड से बनता है और उर्वरक के काम में लिया जाता है, फौलाद निर्माण एवं कार्बाइड लैम्प निर्माण की प्रक्रिया में उपयोग होता है।

चूना मसाला में चूना, रेत और पानी होता है। मूंगा, जोकि टूटीकोरिन के समुद्री किनारे पर शिकार के द्वारा पाया जाता है, अवैध तरीके से ग्रेनाइट के बदले में ढांचा बनाने के काम में लिया जाता है। चूना, चूना मसाला और सिमेन्ट तैयार करने की कच्ची सामग्री केल्शियम कार्बाइड निर्माण में प्रयुक्त होती है।

पान में चूना

दक्षिण-पूर्व एशिया में दिल के आकार का पत्ता, जिसे तांबूल अथवा पान कहते हैं, खाने का प्रचलन है। उसमें मसाला भरकर तिकोनाकार में मोड़कर मस्ती के लिये या पाचन के हेतु से चबाने का आनंद लिया जाता है, चाहे फिर वह सादा हो, मीठा हो, मेवा मिला कर हो या चाकलेट वाला हो। पान-मसाला, खुशबूदार पान, तंबाकु वाला कोइ भी पान हो, उसमें तंबाकु, चूना और कत्था लगता है। पान में प्राणिज पदार्थ होने की पर्याप्त संभावना है। पान के घटक चूना, वर्क, कस्तुरी, गुलकंद, आदि में प्राणिज पदार्थ रहते हैं। गुलकंद में शहद, मूंगा, प्रवाल पिष्टि, मोती पिष्टि, वर्क लगते हैं। ये सभी प्राणिज पदार्थ हैं।

जैन विगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन विगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भेजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। विगन से हमारा तात्पर्य यह है कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि, खाने-पीने में दूध या दूध से बनी किसी भी वस्तु के उपयोग से दूर रहते हैं।

टाकोस

(८-१० व्यक्ति के लिये)

सामग्री :

डेढ कप मक्के का आटा
१ कप मैदा
३ चम्मच तेल
३/४चम्मच नमक
तलने के लिये तेल
ओरेगोन -अनुमानित मात्रा में

विधि :

मक्के का आटा और मैदा इकट्ठा करें। तेल, नमक डालें और पानी मिलाकर आटा गूंधें। मैदे का पलेथन लेकर पतली पूरी बेलें। उस पर कांटे से हलके से छेद करें। गर्म तेल में दोनों ओर से तलें। गर्म रहते हुए ही बीच में से मोड कर U आकार दें। टाकोस को हवाबंद डिब्बे में भरकर रखें।

बिनबेरी टोस

(टाकोस में भरने के लिये पूरन)

सामग्री :

१ कप राजमा
४ बडे चम्मच **जैन** टोमेटो केचप
१ चम्मच लाल मिर्च
नमक स्वाद अनुसार

विधि :

१. राजमा को पूरी रात भिगोकर रखें। दूसरे दिन प्रेशर कूकर में उबालें। पानी निकाल कर राजमा को कूट डालें। २. राजमा, टोमेटो केचप, लाल मिर्च और नमक डालें और थोडी देर सिझने दें। बाद में जरा मसल लें। इस पूरन को टाकोस में भरकर दोनों व्यंजन का साथ में मज़ा उठायें।

-सौजन्यः ब्रिन्दा शाह, वडोदरा

बी. डबल्यु. सी. के साथ अपनी निकटता बढायें

समय समय पर हमें सदस्यों/गैर-सदस्यों के द्वारा पूछा जाता है कि हमारी प्राणी-कल्याण की इस मुहिम में वे हमसे कैसे जुड़ सकते हैं। निम्नदर्शित में से किसी भी प्रकार से आप हमारे और निकट आ सकते हैं।

१. यदि आप बी. डबल्यु. सी. के सदस्य नहीं हैं, तो सदस्यता ग्रहण करें। अपने रिश्तेदार/मित्र को सदस्यता उपहार के तौर पर दें। आजीवन सदस्यता शुल्क केवल रू. ३००/- है। आप औरों को सदस्य बनने के लिये प्रेरित भी कर सकते हैं। वर्ष के दौरान किसी भी अवसर पर अपने परिजनों को बी. डबल्यु. सी. की सदस्यता का उपहार दें।

२. समय-समय पर बी. डबल्यु. सी. के द्वारा चलाई जाने वाली मुहिम में अपना सहयोग करें। वर्तमान में बी. डबल्यु. सी. हरियाणा जैसे राज्यों में ग्रेहाउंड कुत्तों की दौड के खिलाफ शपथपत्र एकत्रित कर राज्य-शासन एवं केन्द्रीय शासन को जन-साधारण की असहमति पहुंचाना चाहती है, जिससे कि ग्रेहाउन्ड कुत्तों के उपर हो रहा अत्याचार बंद हो। आप इस शपथपत्र पर अपने व अपने परिचितों के हस्ताक्षर कर हमारी इस मुहिम में साथ दे सकते हैं। शपथपत्र की अपनी अवश्यकता के लिये बी. डबल्यु. सी. कार्यालय से संपर्क करें। चाहें तो सीधे हमारी वेबसाइट www.bwcindia.org के माध्यम से ओनलाइन विरोध भी दर्ज करा सकते हैं।

३. हमारे द्वारा तैयार किया गया संकल्पपत्र भरकर हस्ताक्षरित करें, जिसमें पशु-कल्याण के विभिन्न मुद्दों पर अपने संकल्प के द्वारा आप प्राणीजगत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जता सकते हैं।

४. आप धनराशि के दान के द्वारा भी हमारी मुहिम से जुड सकते हैं। आपका यत्किंचित् योगदान भी इस मुहिम को बल प्रदान करेगा। यहां पर दिया गया दान आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत करमुक्ति योग्य है।

कार्यालय से संपर्क के लिये ०२०-२६८६११६६
ई-मेल पता admin@bwcindia.org

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है जो किसी जीव को चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो भय, पीड़ा अथवा, मृत्यु नहीं पहुँचाती
करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ रहित कागज़ पर मुद्रित किया जाता है, और प्रत्येक बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई), वर्षा (अगस्त) एवं शीतकाल (नवम्बर) में प्रकाशित किया जाता है।
© करुणा-मित्र का प्रकाशनाधिकार ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना किसी भी प्रकार से किसी भी मुद्रित सामग्री की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।
सम्पादकः भरत कापडीआ
डिझाईन और टाईप सेटींगः योगेश खणगे
मुद्रण स्थलः मुद्रा, 383 नारायण पेठ, पुणे 411 030
प्रकाशकः डायना रत्नागर, अध्यक्षा
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी (भारतीय शाखा)
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
टेलिफोनः +91 20 2686 1166 फैक्सः +91 20 2686 1420
ई-मेलः admin@bwcindia.org वेबसाइटः www.bwcindia.org
Reg. No. 022203/30/86/AL/TC